1

यीशु, ईश्वरीय व मनुष्य नहीं

(1; 2; 4:14-16)

नये नियम की हर पुस्तक की तरह इब्रानियों की पुस्तक यीशु मसीह के बारे में ही है। पुस्तक में उसे ''प्रेरित और महा याजक'' (3:1), ''विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले'' (12:2), ''भेड़ों के महान रखवाले'' और ''हमारे प्रभु यीशु'' (13:20) के रूप में दिखाया गया है, जिसका हम अंगीकार करते हैं। वह मनुष्यजाति के पाप उठाने के लिए दिया जाने वाला बलिदान है, और वह ''कल और आज और युगानयुग एक साथ'' है (13:8)।

परन्तु यीशु के दो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य इब्रानियों की पुस्तक के पहले दो अध्यायों में दिया जाने वाला ज़ोर है कि वह ईश्वरीय और मनुष्य दोनों था।[1] आइए ध्यान देते हैं कि ये अध्याय मसीह की ईश्वरीयता और मनुष्य होने के बारे में क्या कहते हैं, और साथ ही इब्रानियों की पुस्तक में बताए गए उसके ईश्वरीय/मानवीय स्वभाव के परिणामों को देखते हैं।

यीशु ईश्वरीय है

अध्याय 1 में मसीह के ईश्वरीय होने के तथ्य पर ध्यान दें। यह अध्याय यीशु मसीह के बारे में क्या बताता है?

यीशु परमेश्वर का पुत्र और प्रवक्ता (1:1, 2क)। इस प्रकार से वह श्रेष्ठ प्रवक्ता है। ''परमेश्वर ने बाप-दादाओं से ... भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें की'' परन्तु ''इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं।'' परमेश्वर के अपने पुत्र से परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना किसी भविष्यवक्ता से ग्रहण करने से कहीं बेहतर है।

यीशु के द्वारा, परमेश्वर ने संसार को बनाया और संसार को बनाए रखता है (1:2ख, 3ख)। सृष्टि का परमेश्वर का कार्य उसके पुत्र अर्थात यीशु मसीह के द्वारा पूरा हुआ था (यूहन्ना 1:1-14 भी देखें) परन्तु सब बातों की सृष्टि करने से संसार के साथ परमेश्वर का हस्तक्षेप बन्द नहीं हो गया। संसार बना हुआ है, क्योंकि परमेश्वर इसे अपने पुत्र के द्वारा ''बनाए रखता'' है।

यीशु कुल मिलाकर परमेश्वर के जैसा है; उसमें परमेश्वर के गुण हैं यानी ''वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है'' (1:3क)। यीशु का वही स्वभाव है जो परमेश्वर का है (फिलिप्पियों 2:5-9 भी देखें)।

यीशु ''हमारे पापों को धोकर'' परमेश्वर के ''दाहिने हाथ'' बैठा है (1:3ग)। केवल वही जो कुल मिलाकर ईश्वरीय हो, पापों के लिए प्रायश्चित कर सकता था; केवल वही जो परमेश्वर है परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ सकता था। यीशु परमेश्वर है।

ईश्वरीय होने के कारण, यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा है (1:4-14)। अध्याय 1 का शेष भाग इस तथ्य के बारे में है कि यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा है। वह बड़ा है, मुख्यतया इसलिए क्योंकि

वह परमेश्वर का पुत्र है जबकि वे उसके पुत्र नहीं हैं। परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र कहा, पर उसने स्वर्गदूतों को ऐसा कभी नहीं कहा (1:5, 6)। फिर लेखक ने पुत्र अर्थात यीशु मसीह को स्वर्गदूतों से अलग बताया। (क) उसकी आराधना होती है, जबकि इसके विपरीत स्वर्गदूत उसकी आराधना करते हैं (1:6)। (ख) स्वर्गदूत सेवक हैं, परन्तु यीशु राज्य पर शासन करता है (1:7-9)। (ग) यीशु पूरी पृथ्वी का सृष्टिकर्त्ता है, जो एक दिन नष्ट हो जाए और वह परमेश्वर के दाहिने हाथ राज करता है (1:10-13); स्वर्गदूत ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं'' हैं (1:14) जो ''उद्धार पाने वालों'' (मसीही लोगों) की सेवा करते हैं।

इन बातों का हम से क्या लेना देना? यह सच्चाई कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और ईश्वरीय है मसीह द्वारा उद्धार पाने की इच्छा रखने वाले के लिए माननी आवश्यक है (देखें यूहन्ना 8:24)! इब्रानियों 2:1-4 में इब्रानियों का लेखक यीशु के पुत्र होने, उसके ईश्वरीय होने, और इस तथ्य के परिणामों की बात करता है कि वह आज परमेश्वर का प्रवक्ता है।

यीशु की ईश्वरीयता क्यों आवश्यक है?

यीशु के परिचय का बड़ा महत्व इन आयतों में बताया गया है कि हमें उस बात पर जो हमने सुनी है ध्यान देना चाहिए ताकि हम ''बहकर उनसे दूर न चले जाएं'' (2:1)। लेखक ने पुराने नियम की व्यवस्था और इससे जुड़ी बातों की बात करके इस बात को समझाया। उसने कहा, ''जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था [वह वचन मूसा की व्यवस्था था] जब वह स्थिर रहा [उसके पाठक मानेंगे कि ऐसा ही था], और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला [उसके पाठक इस बात को मानेंगे कि ऐसा ही हुआ]। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं?'' (2:2, 3)। पत्र को पहली बार पढ़ने वालों ने इस तर्क को मानने योग्य पाया होगा, जिस कारण कोई बचाव नहीं था!

इस आयत में ज़ोर इस बात पर है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा बात की है; इसलिए हमें या तो उसकी सुननी पढ़ेगी या अनन्त परिणामों का सामना करना पड़ेगा!

जब कुछ लोग हमें बताते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, तो हमें उनकी सुनना ज़रूरी है। बच्चों को अपने माता-पिता की बातें सुनना आवश्यक हैं और छात्रों को अपने शिक्षकों की बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। इसी प्रकार से कर्मचारियों को अपने नियोक्ताओं की बात पर ध्यान देना चाहिए और नागरिकों को पुलिसवालों की बात पर ध्यान देना चाहिए। यदि हम अधिकारियों की बात पर ध्यान नहीं दे पाते तो हम परेशानी में पड़ जाएंगे! यदि कोई यीशु मसीह की सुनने से इनकार कर देता है, जो ईश्वरीय है, जो स्वयं परमेश्वर की ओर से बात करता है, वह कितना परेशान होगा।

यीशु मनुष्य था

मसीह की ईश्वरीयता की बात करने के बाद लेखक ने उसकी मनुष्यता का वर्णन किया। इब्रानियों 2:5-18 में बताई गई मसीह की मनुष्यता की महान सच्चाई पर ध्यान दें। इस वचन का आरम्भ यीशु और स्वर्गदूतों के बीच अन्तर के जारी रहने से होता है। अध्याय 1 में जहां इस पर ज़ोर दिया गया है कि यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा है क्योंकि वह ईश्वरीय है, वहीं अध्याय 2 में इस

बात पर ज़ोर है कि यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा है क्योंकि वह मनुष्य बना। लेखक ने उद्धृत की गई आयतों (भजन संहिता 8:4-6) से ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों से यह प्रतिज्ञा नहीं की थी कि वह संसार को उनके अधीन कर देगा। बल्कि इसके विपरीत उसने यह प्रतिज्ञा मनुष्यजाति के साथ की। अधीनता की प्रतिज्ञा इस पृथ्वी पर पूरी नहीं हुई (2:8ख); परन्तु यह यीशु के द्वारा पूरी हो रही है जिसे ''स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था'' (2:9)। उसे ''महिमा और आदर का मुकुट पहनाया'' गया, सो उसमें भजन संहिता की भविष्यवाणी पूरी होती मिलती है।

यह यीशु कौन है जिसे इतना आदर दिया गया? वह मनुष्य के रूप में रहा: (क) उसने मृत्यु का कष्ट सहा (2:9, 14); क्योंकि केवल शारीरिक प्राणी ही मर सकते हैं। (ख) वह मनुष्य जिन्हें वह बचाता है एक ही स्रोत से आते हैं (2:10, 11)। (ग) उसने सब मनुष्यों को अपने भाई कहा है (2:11ख-13)। (घ) वह मनुष्यजाति के साथ ''मांस और लहू'' में सहभागी हुआ (2:14)। (ङ) वह स्वर्गदूतों को सहायता देने के बजाय मांस और लहू में अपने भाइयों की सहायता करता है (2:16)। (च) उसे ''सब बातों में अपने भाइयों के समान'' बनाया गया (2:17)। इस कारण ईश्वरीय होने के बावजूद वह हर प्रकार से पूरी तरह से मनुष्य भी था![2] यीशु की ये दो सच्चाइयां कि वह ईश्वरीय और मनुष्य भी था, उन सब के द्वारा स्वीकार की जानी आवश्यक हैं जो सचमुच में मसीह बनना चाहते हैं!

इस तथ्य का कि यीशु कुल मिलाकर मनुष्य था व्यावहारिक महत्व क्या है? इब्रानियों के लेखक ने हमारे लिए इस प्रश्न का उत्तर दिया है। इब्रानियों 2:17, 18 फिर से पढ़ें। यीशु के मनुष्य बनने का परिणाम यह हुआ कि मनुष्य बनने के अपने अनुभव से वह हमारा सिद्ध महा याजक बनने के योग्य है: ''क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिसकी परीक्षा होती है'' (2:18)। पुस्तक में आगे, लेखक ने कहा:

> क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (4:15, 16)।

यीशु की मनुष्यता क्यों आवश्यक है?

यीशु पूर्णतया मनुष्य था इस कारण उसने उन सब प्रकार की समस्याओं और परीक्षाओं को सहा, जो हमारे ऊपर आती थीं; इसी कारण वह हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है। इसके अलावा इसका अर्थ यह है कि हम यह जानते हुए कि हमारे लिए विनती करने के लिए सहानुभूति रखने वाला हमारा एक महायाजक है, हम आत्मविश्वास के साथ ''अनुग्रह के सिंहासन'' के पास आ सकते हैं और हमें आना भी चाहिए।

यीशु ईश्वरीय अर्थात परमेश्वर का पुत्र जिस कारण हमें वह जो कुछ भी अपने वचन में कहता है उस पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि हम ध्यान नहीं देते तो हमें दण्ड दिया जाएगा। क्योंकि हर प्रकार से हमारे जैसा बनने के कारण वह मनुष्य है, इस कारण यह जानते हुए कि जिसने हमारी मनुष्यता का अनुभव किया है हमारी निर्बलताओं के साथ सहानुभूति रखता है और हमारी ओर से प्रभावशाली ढंग से परमेश्वर के पास विनती कर सकता है, हम निडरता से

परमेश्वर के निकट आ सकते हैं।

सावधानी और आत्मविश्वास के इन गुणों से हमारे जीवनों में मसीह की ईश्वरीयता और मनुष्यता दिखाई देनी चाहिए। ईश्वरीय मसीह के वचनों को सुनने और मानने में हमें सावधान रहना आवश्यक है, पर हम आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर के निकट आ सकते हैं क्योंकि हमारे पास सहानुभूति रखने वाला महायाजक है जिसने हमारे जैसी निर्बलताओं को सहा है!

सारांश

इब्रानियों 2 अध्याय शायद बाइबल की सबसे बड़ी सच्चाई बताता है कि मसीह हम में से हर किसी के लिए मरा! ''परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे'' (2:9)। वह ''उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा'' करने और ''जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ाने'' के लिए ''आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया'' (2:14, 15)। वह हर किसी के लिए मरा। इसका अर्थ यह है कि वह आपके लिए मरा, ताकि आपको पाप की दासता से निकाला जा सके।

आप इसका क्या करेंगे? क्या आप उसकी मानेंगे जिसे ''सारा अधिकार'' दिया गया है (मत्ती 28:18)? क्या आप यीशु में विश्वास लाकर, अपने पापों से मन फिराकर, अपने विश्वास का अंगीकार करके और मसीह में बपतिस्मा लेकर उसे मानकर उसकी सुनकर उसके वचन को मानेंगे? क्या आप उसके वचन का इनकार करने की हिम्मत रखते हैं जो स्वर्ग से बात करता है। यदि आप इतने बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहेंगे तो आप कैसे बच जाएंगे? इसका उत्तर यह है कि आप बच नहीं पाएंगे! आपको अपने पापों का दण्ड मिलेगा! अपने साथ ऐसा मत होने दें। उसके पास आएं जो उसके साथ मर गया।

टिप्पणियां

[1]इस प्रवचन को दो पाठों में बांटा जा सकता है जिसमें एक पाठ ''ईश्वरीय मसीह'' पर हो और दूसरा ''मानवीय मसीह।'' एक प्रवचन रविवार प्रात: को दिया जा सकता है, जबकि दूसरा रविवार रात को। [2]अपवाद यह है कि किसी भी अन्य जवाबदेह मानवीय जीव के विपरीत, यीशु ने कभी पाप नहीं किया। देखें इब्रानियों 4:14-16.